International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 1; Issue 5; September 2016; Page No. 48-50

रीवा संभाग में हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

[1] मनीष कुमार त्रिपाठी, [2] डॉ0 जय सिंह

[1] शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि0 वि0, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

[2] प्राध्यापक शिक्षा, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

किसी भी राष्ट्र की शिक्षा को वहाँ की सांस्कृति के परिपेक्ष्य में ही समझा जा सकता है। शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक एक महत्वपूर्ण नहीं होता है तथा वही हमारी संस्कृति के सुविचार का संरक्षक होता है। अध्यापक ही विद्यालय तथा शिक्षण प्रक्रिया की वास्तविक रूप से गत्यात्मक या गतिशील शक्ति है। डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृश्णनन ने कहा है कि – ''समाज में अध्यापक का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण है। वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को बौद्धिक एवं तकनीकी कुशलताओं का हस्तान्तरण करने का केन्द्र है और सभ्यता कें प्रकाश को प्रज्वलित रखनें में सहायता देता है।'' इस शोध पत्र के माध्यम से विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव की वर्तमान स्थिति तथा उनमे आने वाली कठिनाइयों का आंकलन किया गया है। शोध क्षेत्र में 72.12 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते है कि हाई स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

मूलशब्द: रीवा संभाग, हाई स्कूल, विद्यार्थी, सामाजिक व्यवहार एवं शैक्षणिक उपलब्धि।

प्रस्तावना

शिक्षा मनुष्य को अज्ञात तत्वों से परिचित कराकर उसे अनेक जटिल रहस्यों को समझने के योग्य बनाती है। अर्थात उसे ज्ञानवान, चिंतक, विचारक तथा अभिव्यक्ति की क्षमता से युक्त बनाती है। शिक्षा मनुष्य के उन सभी नैतिक आदर्शों को स्थापित करने का कार्य करती है, जो उसे सही अर्थों में सामाजिक प्राणी के रूप में मान्य करने हेतु आवश्यक है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि मनुष्य को मानव के रूप में परिवर्तित करने का कार्य शिक्षा ही करती है।

शिक्षा सतत् चलने वाली प्रक्रिया है। मनुष्य ने आदिकाल से ही शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया तथा उसने यह भी माना कि शिक्षा ही उसके जीवन को सुखमय बनाने हेतु केवल एकमात्र साधन है। यही कारण है कि मानव सभ्यता के प्रथम चरण से ही उसके द्वारा शिक्षा के अनुप्रयोग के संकेत प्राप्त होने लगते हैं। आज विश्व में ईसा के जन्म के 1200 वर्ष पूर्व तक के शैक्षिक इतिहास में साक्ष्य उपलब्ध हैं जो शिक्षा की उपयोगिता के स्तर को आज से लगभग 3000 वर्ष से स्वीकार करने के तथ्य को सत्यापित करते हैं। यह बात अवश्य है कि समय परिवर्तन के साथ–साथ शिक्षा के स्वरूप तथा उद्देश्यों में भी परिवर्तन होते रहते हैं किन्तु इसका महत्व तो सदैव सर्वोपरि ही रहता है।

प्रत्येक राष्ट्र का नैतिक उत्तरदायित्व उसके अपने समस्त नागरिको को सामान्य शिक्षा उपलब्ध कराने का होता है, क्योंकि शिक्षा ही ऐसे नागरिकों को तैयार करती है जो सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक तीनों ही क्षेत्रों में अपने देश की प्रगति का कर्णधार वन सके। इसलिए यदि दृष्टिपात किया जाय तो ऐसे देश आज विश्व की अग्रणी पंक्ति में है, जहाँ शिक्षा का प्रचार–प्रसार अन्य देशों की तुलना में उत्तम है।

समाज अपनी आवश्यकतानुसार शिक्षा के उद्देश्यों में परिवर्तन करता आया है, फलस्वरूप शिक्षा के क्षेत्र भी परिवर्तित हुए है। प्राचीनकाल में शिक्षा का उद्देश्य 'सा विद्या या विमुक्तये' था। क्रमशः आवश्यकताओं के असीमित होने से इसके उद्देश्यों में भी परिवर्तन हुआ है।

आज की शिक्षा हमारी जमीन, सभ्यता व संस्कृति से दूर लिए जा रही है और हमें पश्चिमी संस्कृति में जीना सिखा रही है। यही कारण है कि समाज में विषमता की खाई बढ़ती जा रही है और महानगरों में जहां अधिकतर शिक्षित व्यक्ति रहते हैं, समाज अपने में ही सिकुड़ा सा रहता है। वर्तमान शिक्षा ने सांस्कृतिक मूल्यों को समाप्त कर औद्योगिक मूल्यों की स्थापना की है। इस शिक्षा ने हमको जल, जंगल, जमीन के साथ हमारे पैतृक उद्योग धंधों से भी अलग कर दिया है। आज कल प्रत्येक माँ–बाप की प्रबल इच्छा यही होती है कि अपने बच्चे को ऐसी शिक्षा दिलवायें ताकि वह नौकरी प्राप्त कर सके। आज कोई किसान, बढ़ई, लोहार, मिस्त्री व इसी तरह के अन्य कोई काम करने वाला माँता–पिता यह नहीं चाहता कि उनकी संतान पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे व्यवसाय के हुनर को सीखकर उसे आगे बढ़ाए व नाम कमाये। यही कारण है कि आज हमारे देश में कई हुनर समाप्त हो चुके हैं। गाँधी ने भी लोक हुनर से युक्त उद्देश्यपूर्ण बुनियादी शिक्षा की बात कही थी। लेकिन हमारे जहन में आज की शिक्षा का अर्थ कागज, कलम, किताब पर आधारित शिक्षा से है। इस प्रकार की शिक्षा का एक मात्र ध्येय बाबू और अफसर तैयार करना है। इससे हमारे आर्थिक और सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति नहीं होती। भारत एक श्रमप्रधान देश है। लेकिन इस प्रकार की शिक्षा से हुनरमंद कारीगर अपने हुनर से किसान अपने हल और कृषि से तथा श्रमिक श्रम की गरिमा से जुदा होता जा रहा है।

अध्ययन की आवश्यकता

अध्ययन के द्वारा शैक्षणिक दृष्टि से अल्प विकशित रीवा संभाग के हाई स्कूल स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव की समीक्षा की जाएगी, वहीं दूसरी ओर इसमें आने वाली कठिनाइयों की जानकारी प्राप्त

की जाएगी तथा इन्हें सशक्त बनाने के लिए अपने शोध कार्य में वास्तविक स्थिति का विश्लेषण कर सशक्त प्रभावी सुझाव प्रस्तुत कर सकेगा जिनका उपयोग न केवल शोध क्षेत्र में अपितु सम्पूर्ण देश में शिक्षा के विकास हेतु किया जा सकेगा।

शोध की परिकल्पनायें

रीवा संभाग के हाई स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

उद्देश्य

- हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का पता लगाना।
- हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारको का पता लगाना।
- हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि के मार्ग में आने वाली समस्याओं व अवरोधों को ज्ञात करना।

शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तावित शोध कार्य का क्षेत्र रीवा संभाग है। इसके अन्तर्गत 4 जिले – रीवा, सतना, सीधी व सिंगरौली हैं। अतः संभाग अन्तर्गत स्थित हाई स्कूल स्तर के विद्यालय इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन हेतु अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

समष्टि व प्रतिदर्श

इस अध्ययन की समष्टि में रीवा संभाग के 04 जिले के हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों से 10 ग्रामीण व 10 शहरी विद्यालयों से 2–2 शिक्षक कुल 160 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य, तथा प्रत्येक विद्यालय से 10 बालक एवं 10 बालिकाएं कुल 1600 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से शोधार्थी ने अपने शोध के लिये चुना है।

शोध उपकरण

शोधकर्त्ता ने हाई स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया है।

पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने हाई स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – कौल लोकेश (1998) [1], मूज, आर. (1964) [2], थोर्प, एल.वी. और सैमुलर, ए.एम. (1965) [3], ओल्पोर्ट, जी. डब्ल्यू (1937) [4] व खान, प्रो. एस. एच. और श्रीमती शुक्ला भट्टाचाय (1987) [5]।

प्रदत्त संकलन विधि

प्राथमिक तथ्य सामग्री के संकलन हेतु प्रत्यक्ष साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से एवं द्वितीयक तथ्य सामाग्री के संकलन हेतु दस्तावेजी अध्ययन स्त्रोतों यथ विभागीय वार्षिक प्रशासकीय प्रतिवेदन, पूर्ववर्ती अध्ययन व शोध रिपोर्ट व इंटरनेट व अखवारों के माध्यम से तथ्य संकलन कर शोधकार्य पूरा किया गया है।

रीवा संभाग का सामान्य परिचय

रीवा नगर भारत के मानचित्र में 24 डिग्री, 32 अंश उत्तरी अक्षांश तथा 81 डिग्री 24 अंश पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। समुद्र तल से इसकी ऊँचाई 1045 फिट है। इस नगर के दक्षिण–पूर्व की ओर बिछिया और दक्षिण–पश्चिम से आती हुई बीहर नदी है। रीवा नगर पूर्व रीवा रियासत की राजधानी रहा है। 4 अप्रैल 1948 को रीवा स्टेट तथा बुन्देलखण्ड की 34 रियासतों को मिलाकर विन्ध्य प्रदेश का निर्माण किया गया था। उस समय इस नगर को नवनिर्मित प्रदेश की राजधानी बनने का गौरव प्राप्त हुआ था। 01 नवम्बर 1956 को जब मध्य प्रदेश का निर्माण हुआ तब इस नगर को सम्भागीय मुख्यालय का दर्जा प्राप्त हुआ।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

सारणी 1: हाई स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श	न्यादर्श में चयनित संख्या	हाई स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक			
			प्रभाव पड़ता है		प्रभाव नही पड़ता है	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	प्राचार्य	80	66	82.50	14	17.50
2.	शिक्षक	160	134	83.75	26	16.25
4.	छात्र	1600	1127	70.44	473	29.56
योग		1840	1327	72.12	513	27.88

स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र के 82.50 प्रतिशत प्राचार्य, 83.75 प्रतिशत शिक्षक व 70.44 प्रतिशत छात्र यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है और शोध क्षेत्र के 29.56 प्रतिशत छात्र, 16.25 प्रतिशत शिक्षक व 17.50 प्रतिशत प्राचार्य यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव नही पड़ता।

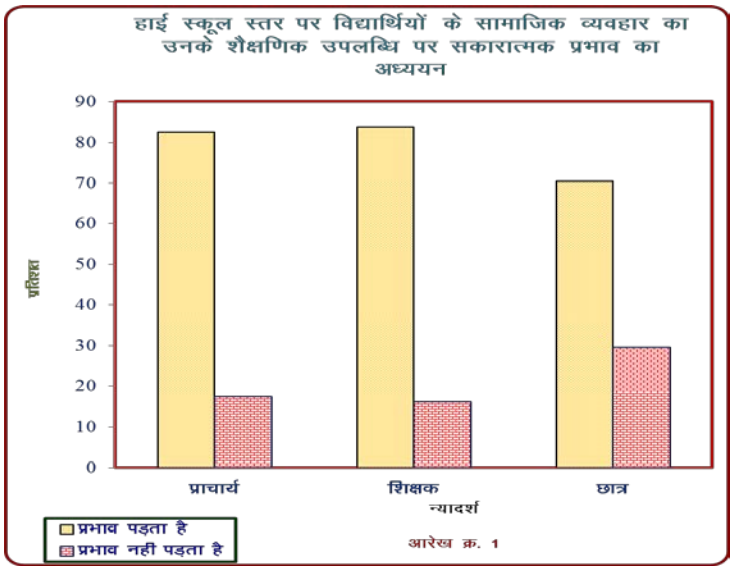

आकृति 1

सांख्यिकीय विश्लेषण

काई वर्ग की गणना

आवृत्ति	अभाव है	अभाव नही है
F_o	72.12	27.88
F_e	50.00	50.00
F_o-F_e	22.12	-22.12
$(F_o-F_e)^2$	489.29	489.29
$\frac{(F_0-F_e)^2}{F_e}$	9.79	9.79

$$\chi^2 = \sum \frac{(F_0-F_e)^2}{F_e}$$

$\chi^2 = 19.57$

विश्लेषण एवं व्याख्या

शोध क्षेत्र के हाई स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव की स्थिति ज्ञात करने के लिए प्राप्त आंकड़ों को काई वर्ग द्वारा विश्लेशित किया गया। गणना द्वारा χ^2 का मान 19.57 है, जबकि तालिकामान 1df पर तथा 0.05 व 0.01 level पर 3.84 व 6.63 है। गणना मान अधिक होने के कारण सार्थक है कि हाई स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि रीवा संभाग हाई स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

संदर्भ

1. कौल लोकेश : शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिसिंग हाउस प्रा.लि., नई दिल्ली, 1998.
2. मूज, आर. : 'सोशल इकोलॉजी, मल्टी डाइमेन्सनल स्टडीज ऑफ ह्यूमन्स एण्ड ह्यूमन मिल्यूज इन हैम्बर्ग डी. एण्ड ब्रोडी, के (एडीटर्स) फ्रन्टीयर्स ऑफ साइकोलाजी, वोल्यूम 6, अमेरिकन हैण्डबुक ऑफ साइकियाट्री बेसिक बोर्डस, न्यूयार्क, 1964; पृ.–355–365.
3. थोर्प, एल.वी. और सैमुलर, ए.एम. : 'पर्सनेल्टी एण्ड इन्टर डिस्सपलीनरी एपरोज' न्यूयार्क : एन ईस्ट–वेस्ट एड., 1965.
4. ओल्पोर्ट, जी.डब्ल्यू : 'व्यक्तित्व' ए साइकोलोजीकल इन्टरपरिटेशन, न्यूयार्क : हाल्ट, 1937.
5. खान, प्रो. एस. एच. और श्रीमती शुक्ला भट्टाचार्य, अध्यापकीय दर्शिका : परिवेशीय अध्ययन–कक्षा 1. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली (भारत), 1987, पृष्ठ 44.